THE

PARLIAMENTARY DEBATES

(Part II—Proceedings other than Questions and Answers)

OFFICIAL REPORT

Acc. No. 25173 Dated 25.11.20

HOUSE OF THE PEOPLE

Tuesday, 7th April, 1953

The House met at Two of the Clock

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS
(*See Part I*)

3-15 P.M.

FINANCE BILL

PRESENTATION OF REPORT OF COMMITTEE ON PETITIONS

Pandit Thakur Das Bhargava (Gurgaon): I beg to present the Report of the Committee on Petitions on the Bill to give effect to the financial proposals of the Central Government for the financial year 1953-54.

DEMANDS FOR GRANTS—*contd.*

Mr. Deputy-Speaker: The House will now proceed with the further discussion on Demands for Grants, of the Ministry of Finance.

श्री आर० एन० सिंह (जिला गाज़ीपुर—पूर्व व जिला बलिया—दक्षिण पश्चिम): उपाध्यक्ष जी, जैसा मैं ने कल कहा था कि ईस्टर्न यू० पी० की आबादी करीब दो करोड़ है अर्थात् जितनी राजस्थान की है उस से ज्यादा, सी० पी० के बराबर और मैसूर के दूने से भी अधिक है। लेकिन आप विचार करें कि इस इतने बड़े भू भाग में केवल एक काटन मिल है और सिर्फ एक जूट मिल है और वहां की आबादी दो करोड़ है। इस के अलावा वहां पर जो भी इंडस्ट्री है वह होम इन्डस्ट्री है और वह बनारसी क्लाथ, वूलन कारपेट और ओपियम इन तीन चीजों की इन्डस्ट्री है। लेकिन आप देखेंगे कि इस वक्त हम

पाकिस्तान को आबाद कर रहे हैं। हमारे ईस्टर्न यू० पी० में करीब तीन लाख मुसलमान वीवर्स हैं। केवल वही नहीं पाकिस्तान जा रहे हैं, बल्कि हिन्दू लोग भी हिन्दुस्तान छोड़ कर पाकिस्तान को भाग रहे हैं। इस का कारण यह है कि बनारसी इंडस्ट्री का धीरे धीरे खातमा हो रहा है और उसके साथ ही साथ वूलन कारपेट इंडस्ट्री का भी धीरे धीरे खातमा हो रहा है और हिन्दुस्तान के बाहर ईरान में, मलाया में, अफ्रीका में, चीन में, अरब में जितने स्थानों पर हमारे बाज़ार थे उन बाज़ारों पर धीरे धीरे पाकिस्तान का हाथ फैल रहा है और अगर यही स्थिति रही तो थोड़े दिन में सारा मारकेट पाकिस्तान के हाथ में आ जायेगा। अब मैं आपको बताऊंगा कि हमारे हिन्दुस्तान में यह कहा जाता है कि करीब २५ या ३० लाख पाउंड रेशम की हर साल आवश्यकता होती है। इस में से हिन्दुस्तान में कुल १४,१७,७३० पाउंड रेशम पैदा होता है। इस का अर्थ यह है कि ११ लाख से ले कर सौलह लाख पाउंड तक रेशम की हमारे यहां पर कमी है। इस कमी को सन् ४८ से पहले हम जापानी रेशम से, इटालियन रेशम से पूरा करते थे। लेकिन अब जब से यह टैरिफ हमारे यहां शुरू हुई है और ३० परसेंट ऐडवेलोरम ड्यूटी और तीन रुपये १४ आने प्रति पाउंड के हिसाब से सरचार्ज लगाया जाने लगा है तब से हमारे यहां हिन्दुस्तान में जापानी और इटालियन रेशम